RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-04
April-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

मानव मूल्यों की रक्षा के संदर्भ में स्वामी विवेकानन्द के दार्शनिक विचारों की प्रासंगिकता

सीमा मिश्रा

शोध छात्रा (पीएच.डी.) मेवाड़ विश्वविद्यालय, चित्तौड़गढ़, राजस्थान

प्रस्तावना

वर्तमान समय में जहाँ दुनिया में तकनीक का विकास इस कदर बढ़ गया है कि मनुष्य पृथ्वी पर ही नहीं वरन् पृथ्वी से इतर चाँद और मंगल पर भी अपनी तकनीक की मौजूदगी का प्रमाण दे दिया है ऐसे समाज में जहाँ मनुष्य ने अपनी सूझ–बूझ से प्रकृति की ऐसी कोई भी रहस्यात्मक अभिव्यक्ति क्यों न हो उसे सुलझाने में अधिकतर सफल रहा है। परंतु इतना कुछ हासिल कर लेने के बाद भी मनुष्य अपनी मनुष्यता को दिन ब दिन खोता जा रहा है प्रगति करने के होड़ में मनुष्य यह भूल जा रहा है कि सब कुछ हासिल कर लेने के बाद भी शायद वह तकनीक के भीड़ में अपनी पहचान खोता जा रहा है, सब कुछ बहुत आसान हो जाने का परिणाम यह नहीं है कि मनुष्य जो चाहे कर सकता है मशीन के अत्यधिक उपयोग से शायद मनुष्य एक मशीन तो बन गया परंतु अपनी मनुष्यता, जो जानवर से मुनष्य को अलग करती है वह पहचान खोता जा रहा है और आज शायद मशीन ही नहीं मनुष्य भी अपना स्वयं का दुश्मन बन गया है। प्रेम, दया, करूणा, त्याग, संस्कार, सम्मान, यश, सब कुछ धीरे–धीरे मनुष्य से दूर होने लगे हैं। प्रगति की चाहत ने मनुष्य से मनुष्यता छीन ले रही है आज हर तरफ सिर्फ विकास के नाम पर शोषण हो रहा है चाहे वह मनुष्य का हो या प्रकृति का। आज की इस दुनिया में 'हम' का अस्तित्व खत्म सा होता जा रहा है सभी 'हम' से कब 'मैं' और 'मेरा' ही के विकास पर सरक गये शायद कोई नहीं कह सकता।

धर्म, जाति, वेश, भाषा, खान–पान, रहन–सहन, संस्कृति, समाज, राजनीति के नाम पर इतना बँटता जा रहा है कि उसे अपने सिवा दूसरे किसी की भी संस्कृति, धर्म, मान–सम्मान, की परवाह नहीं रह गया है और दूसरों को नीचा दिखाकर स्वयं को उच्च प्रदर्शित करना उसका अहम् स्वभाव बन गया है। ऐसा समाज कभी भी द्वेष, छल–कपट, हिंसा, अराजकता आदि दुष्प्रवृत्तियों से अलग नहीं हो सकता है। शिक्षा तो बढ़ रही है परंतु संस्कार घट रहे हैं धन तो बढ़ रहा है परंतु दान का महत्व कम हो रहा है, धर्म तो बढ़ रहा है परंतु दूसरों के धर्म के प्रति सम्मान घट रहा है। ऐसे समाज में जहाँ सिर्फ मशीन और मशीन ही जीवन का एक अहम् हिस्सा बनता जा रहा है ऐसे में मानवता कैसे जीवित रह सकती है।

आज वर्तमान समय में जब सभी देश विकास के नाम पर एक दूसरे देश को कमजोर साबित कर उसका हनन् करने को तत्पर हैं अपनी ताकत को दिखाने के लिए इसी तरह विश्व में व्याप्त अलग–अलग धर्म सम्प्रदाय अपने धर्म को आगे बढ़ाने के लिए दूसरे धर्म को नीचा दिखाने के लिए सदैव तत्पर रह रहे हैं ऐसे में नुकसान र्सिफ मानवता का ही है।

शायद अब हमें मानवता को बचाने के लिए कुछ ऐसा करना पड़ेगा जिसमें सभी की भावनाओं को सम्मान पहुँचाते हुए विकास की बात हो सके और यह तब संभव है हमारे युग नायक स्वामी विवेकानन्द जी के दार्शनिक विचारों को अपना कर हमें मानवता को बचाना होगा। हमें स्वामी जी की उन विचारों तथा शिक्षाओं, उपदेशों को अपनाना पड़ेगा जो समाज में एकता ला सके सभी का समानरूप से विकास हो सके कोई भेदभाव न रहे इसके लिए भारत के साथ–साथ अन्य देशों को भी स्वामी जी के विचारों को महत्ता प्रदान करते हुए उसे अपनाना पड़ेगा जिससे मनुष्य में मनुष्यता का पुनः वास हो सके तथा आज का मनुष्य जो विचारों और कर्मों से जानवर बनता जा रहा है उसका कल्याण हो सके।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार संसार के समस्त धर्म ग्रंथों में एकमात्र वेदांत ही एक ऐसा धर्म ग्रंथ है जिसकी शिक्षाओं के साथ बाहरी प्रकृति के वैज्ञानिक अनुसंधान से प्राप्त परिणामों का सम्पूर्ण सामंजस्य है। वेदांत का अद्वैत रूप यही कहता है कि व्यक्ति जीवन रूप में हम मानव अलग–अलग होकर रहते हैं किन्तु वास्तव में हम सब एक ही सत्य के स्वरूप है।

मानव सेवा ही सर्वश्रेष्ठ उपासना है वेदांत एकतत्ववाद की शिक्षा देता है सब के प्रति विश्वास करना सिखाता है स्वयं के प्रति प्रेम और विश्वास का आशय सब प्राणियों से प्रेम सभी पशु–पक्षियों से प्रेम है। वेदांतक दृष्टि मानव मात्र की समानता का पक्षधर है कर्मकांड और वर्णव्यवस्था को निर्मूल सिद्ध कर मानव गरिमा को प्रतिष्ठित करती है। आज समस्त विश्व को वेदांत की इसी व्यवहारिक दृष्टि की सर्वाधिक आवश्यकता है।

भारत के लिए स्वामी जी के विचार चिंतन और संदेश प्रत्येक भारतीय के लिए अमूल्य धरोहर हैं तथा उनके जीवन शैली और आदर्श प्रत्येक युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणास्त्रोत हैं। स्वामी जी भारतीय संस्कृति, शिक्षा तथा धर्म के समग्रता के संबंध में आज हमारे सामने विशेषकर युवा पीढ़ी के लिए यह आह्वान की ''मानव गौरव को कभी मत भूलों'' हम में से प्रत्येक व्यक्ति यह घोषणा करें कि ''मैं ही ईश्वर हूँ'', जिससे बड़ा न कोई है न ही होगा।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

स्वामी जी के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी देना मात्र नहीं है अपितु उसका लक्ष्य जीवन चरित्र और मानव का निर्माण करना है। वे वर्तमान शिक्षा को अभावात्मक बताते थे जिसमें विद्यार्थियों को अपनी संस्कृति का ज्ञान नहीं होता। स्वामी जी मानव धर्म के प्रति दृढ़ प्रतिज्ञ थे। उन्होंने धार्मिक संकीर्णता से ऊपर उठाते हुए घोषणा कि ''प्रत्येक धर्म, सम्प्रदाय जिस भाव में ईश्वर की आराधना करता है, मैं उनमें से प्रत्येक के साथ ठीक उसी भाव से आराधना करूँगा''। स्वामी जी के अनुसार बाईबिल, वेद, गीता, कुरान तथा अन्य धर्मग्रंथ समूह ईश्वर के विचारों के एक–एक पृष्ठ हैं वे प्रत्येक धर्म को महत्व देते थे तथा उनके सार भूत तत्वों को जो मानव जीवन को उनका चरित्र तथा जीवन को प्रकाशिता करने में सक्षम हो को अपनाने का आह्वान करते थे जिसे ''सर्वधर्म सम्भाव' कहा स्वामी जी के अनुसार मानव से बढ़कर और कोई श्रेष्ठ सेवा नहीं है और यही से शुरू होता है वास्तविक जीवन की यात्रा। आज हमें स्वामी जी के आदर्शों पर चलने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ होना होगा उनके विचार, संदेश तथा दर्शन, शिक्षा को साकार रूप में अपनाकर उनका अनुकरण करना होगा। स्वमी जी की जीवन शैली को आत्मसात कर जन–जन में प्रेम, एकता दया का संचार कर एक नए युग की शुरुआत करना होगा।

स्वामी विवेकानन्द भारतीय और विश्व इतिहास के उन महापुरुषों में से हैं जो व्यक्तित्व और विचारों को सर्वश्रेष्ठ बनाकर मानव का कल्याण करने का प्रयास करते हैं ''उनके विचार शिक्षा और दर्शन इतने प्रभावी हैं कि स्वामी जी द्वारा दिए गए सैकड़ों वक्तव्यों में से कोई एक वक्तव्य महान क्रांति करने में सक्षम है तथा किसी भी व्यक्ति के जीवन में परिवर्तन कर सकता है।'' स्वामी जी का जीवन दर्शन – सन् 11 सितंबर 1893 ई. में शिकागो (अमेरिका) के विश्व धर्म सम्मेलन में वे भारत के प्रतिनिधि बनकर गये जिस स्पष्टता और सूक्ष्मता के साथ स्वामी जी ने 'वेदांत' की व्याख्या की पाश्चात्य विद्वानों को यह काफी आकर्षित किया स्वामी जी ने अनेक देशों के भ्रमण के दौरान अनेक सम्भ्रांत व्यक्तियों से मिले तथा अनेक रीति–रिवाज, संस्कृतियों तथा परिस्थितियों का प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त किया।

स्वामी विवेकानन्द मानव धर्म को सर्वश्रेष्ठ धर्म मानते थे, उनके अनुसार, ''धर्म मनुष्य के चिंतन और जीवन का सबसे उच्च स्तर है।'' मानवता को जिस तीव्रतम प्रेम का ज्ञान है, वह धर्म से ही प्राप्त हुआ है, और वह घोरतम पौशाचिक घृणा भी, जिसे मानवता ने कभी अनुभव किया, वह भी धर्म से ही प्राप्त हुआ है। किसी धर्म का उद्देश्य जितना ही उच्च हेाता है, उसका संगठन जितना ही सूक्ष्म होता है, उसकी क्रियाशीलता भी उतनी ही अद्भूत होती है। धर्म प्रेरणा से मनुष्य जितना निष्ठुर हेा जाता है, उतना और किसी प्रेरणा से नहीं उसी प्रकार, धर्म प्रेरणा से मुनष्य जितना नम्र हो जाता है उतना किसी और प्रवृत्ति से नहीं।

स्वामी जी के अनुसार भारतवासियों को ऐसे धर्म की आवश्यकता नहीं है जो कमजोरी पैदा करें। स्वामी जी के अनुसार देश को लौह पुरुषों तथा दृढ़इच्छा शक्ति के लोगों की आवश्यकता है जिन्हें अपने लक्ष्य प्राप्ति से कोई रोक न सकें। हिन्दू वैदिक धर्म विवेकानंद के अनुसार नैतिक मानववाद तथा आध्यात्मिक आदर्शवाद के सार्वभौमिक तत्वों का संदेश देता है। स्वामी विवेकानन्द का धर्म सर्वधर्म है वे किसी भी धर्म के पक्षधर नहीं थे बल्कि प्रत्येक धर्म के मूल, सारतत्व मानव कल्याणकारी अनिवार्य उपयोगिता जो मानव को सच्चे धार्मिकता प्रदान करते हो के मानने वाले थे।

धर्मों की सार्वभौमता की एक पहचान यह है कि उसके द्वार हर धर्म के व्यक्ति के लिए खुले रहें। स्वामी जी धर्म को मानव जाति को एकता के सूत्र में बाँधने वाली शक्ति के रूप में मानते थे।

विवेकानंद अपने विचारों में वेदांतीक रहें लेकिन उन्होंने गीता के निष्काम कर्म तथा ईसाई के प्रेम और सेवा के आदर्श को भी अनुकरणीय माना। बौद्ध धर्म के सर्व मुक्ति बोधिसत्व के आदर्श ने तो उनको बहुत गहराई से प्रभावित किया। विवेकानंद के चिंतन में आध्यात्मिकता व्यवहारिकता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का अद्भुत संगम हैं उन्होंने आध्यात्मिक उत्थान के पहले जीवन की भौतिक आवश्यकताओं को पूरा कर लेने को आवश्यक माना तथा गरीबों और उत्पीड़ितों के उद्धार कर्म को ईश्वर आराधना का नाम दिया। स्वामी विवेकानन्द अपने मन प्राण से एक क्रांतिकारी समाजवादी थे जिन्होंने सम्पूर्ण मनुष्य जाति को उसके देवी स्वरूप का उपदेश दिया तथा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उसे प्रकट करने का उपाय बताया यही उनके जीवन का आदर्श था। स्वामी विवेकानन्द के उपदेश वेदांत की क्षमता तथा आत्मा की विश्व व्यापकता की शक्तियों पर प्रतिष्ठित है विवेकानंद ने शंकराचार्य की बुद्धिमता तथा महात्माबुध की विराट हृदय वाणी को आत्मसात करते हुए सम्पूर्ण विश्व के कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया।

मनुष्य का भौतिक स्वरूप उसके आध्यात्मिक या वास्तविक स्वरूप की सीमाबद्ध भाव मात्र है या मनुष्य का शरीर उसके अस्तित्व से संबंधित है तथा देश काल की सीमा में बंधा है यदि मनुष्य का जो भौतिक स्वरूप आध्यात्मिक स्वरूप की अपेक्षा निरंतर भले ही हो लेकिन उपेक्षित नहीं है क्योंकि मस्तिष्क शक्ति से संयुक्त होने के कारण मनुष्य अपनी भौतिक स्वरूप में भी विशिष्ट प्राणी है मानव अपने व्यवहारिक स्वरूप के स्तर पर सीमाबद्ध है लेकिन इसी स्थान पर वह अपने अनंत और असीम स्वरूप को प्राप्त कर आगे बढ़ने की निर्मित संघर्ष कर रहा है विवेकानंद का मानना है कि आत्मा का एक ही प्रयोजन है और वह है मुक्ति इसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए मनुष्य के भौतिक स्वरूप का प्रयोजन सिद्ध होता है।

विवेकानंद के अनुसार मनुष्य का भौतिक स्वरूप आत्मा से भिन्न और मन के साथ संयुक्त है लेकिन देह आत्मा

है और ना मन आत्मा है देह और मन तो सतत् परिवर्तन शील है इसके अंवतर आत्मा अपने स्वरूप और सार तत्वों से शुद्ध व पूर्ण है असीम और सर्वव्यापी है किसी भी व्यक्ति

विवेकानन्द के अनुसार मनुष्य का भौतिक स्वरूप आत्मा से भिन्न और मन के साथ संयुक्त है। लेकिन न देह आत्मा है और ना मन आत्मा है। देह और मन तो सतत् परिवर्तनशील हैं। इसके अनंतर आत्मा अपने स्वरूप और सार तत्वों से शुद्ध व पूर्ण है। आत्मा असीम और सर्वव्यापी है किसी भी व्यक्ति की देह एक समान नहीं रहती तथा मन की सुख–दुख सबल दुर्बल आदि भावों के अंतर में झूलता रहता है। इसके अतिरिक्त देह और मन में ह्रास और वृद्धि भी दिखाई देती है। परिणामस्वरूप देह मन से जुड़े मानव के भौतिक स्वरूप में भी परिवर्तन दिखाई देते हैं लेकिन इसके बाद भी विवेकानन्द का कहना है कि मनुष्य अपने व्यावहारिक भौतिक स्वरूप में भी अन्य प्राणियों की अपेक्षा देह और मन दोनों स्तरों पर अधिक व्यवस्थित और संगठित है। यह मनुष्य का प्राकृतिक स्वरूप है जो वास्तविक है। मनुष्य अपने भौतिक स्वरूप की विभिन्न सोपान में से इसी अनंत और प्राकृतिक स्वरूप को प्रदान करने के लिए संघर्ष करता है। मनुष्य अपने आध्यात्मिक स्वरूप में सदा एक अव्यक्त समष्टि स्वरूप अनंत आत्मा ही है और यसी मनुष्य का यथार्थ स्वरूप है। यही ईश्वर प्रत्येक का प्राकृतिक व्यक्तित्व है। विवेकानन्द मानते हैं कि अपने प्राकृत स्वरूप में मनुष्य अनंत और सर्वव्यापी है और दिखने वाला जीव मनुष्य के वास्तविक स्वरूप का सीमाबद्ध मात्र है, अतः स्पष्ट है कि विवेकानन्द मनुष्य के वास्तविक आत्मिक और आध्यात्मिक स्वरूप को व्यवहारिक भौतिक स्वरूप की अपेक्षा उच्चतर मानते हैं। मनुष्य का यह यथार्थ प्रकृत स्वरूप देश काल तथा कार्यकारण से अधिक होने के कारण मुक्त स्वभाव है। मनुष्य की आत्मा के भीतर जो यथार्थ सत्य है वह आत्मा को सर्वव्यापी अनंत तथा चैतन्य बनाता है। आत्मा अनंत है और उसके संबंध में जन्म और मृत्यु का प्रश्न ही नहीं उठाया जा सकता। विवेकानन्द मनुष्य के वास्तविक स्वरूप को आत्मन कहते हैं। उनके अनुसार मनुष्य अपनी इस यथार्थ आत्म रूप से ब्रह्म रूप ही है। आत्मन और ब्रह्म में अभेद और तादात्म्य मानते हुए स्वामी विवेकानन्द कहते हैं कि मनुष्य के नाम से जिसको हम जानते हैं वह व्यक्तित्व को व्यक्त जगत में अभिव्यक्त करने की संघर्ष का फल मात्र है। यह क्रम आत्मा में नहीं है मनुष्य में दिखाई देने वाले परिवर्तन बुरा व्यक्ति भला हो रहा है, पशु हो रहा है, सब आत्मा में घटित नहीं होता। आत्मा सभी जातियों और परिवर्तनों से परे है और यही आत्मा मनुष्य का वास्तविक आध्यात्मिक स्वरूप है। यद्यपि आत्मा विभिन्न रूपों में व्यक्त होता है लेकिन इन विभिन्नताओं से इसका मूल स्वरूप विच्छेद नहीं होता है। विवेकानन्द के अनुसार मैं और तुम के सारे भेद मिथ्या है। विवेक के उदय होने पर ही मनुष्य अपने अद्वैत रूप से परिचित होता है जो उसका वास्तविक यथार्थ स्वरूप है। उनका विचार है कि मनुष्य प्रायः संकट अवस्था या प्रतिवूफल परिस्थितियों में ही अपने वास्तविक स्वरूप को जानने का प्रयास करता है। जब हम कहते हैं कि मनुष्य को अपने आत्म रूप को जागृत करना चाहिए तो इसका आशय यही है कि मनुष्य के अन्दर का आत्मिक शक्ति वास्तविक आध्यात्मिक ईश्वरीय स्वरूप का प्रतीक है।

विवेकानन्द कहते हैं कि प्रत्येक जीव अव्यक्त ब्रह्म है बाहरी और आंतरिक प्रकृति को वशीभूत करके स्वयं में अंतर्निहित ब्रह्म स्वरूप को व्यक्त करना ही जीवन का परम लक्ष्य है। कर्म, भक्ति, संयम या ज्ञान इनमें से किसी का सहारा लेकर अपने ब्रह्म भाव को व्यक्त कर मुक्त हो जाना धर्म का सार है। धर्म वह वस्तु है जिससे पशु मनुष्य तक तथा मनुष्य परमात्मा तक उठ सकता है। विवेकानन्द की मान्यता है कि धर्म मनुष्य के चिंतन और जीवन का सबसे ऊँचा स्तर है। मानव जाति के निर्माण में जितनी शक्तियों ने योगदान दिया है उनमें धर्म की शक्ति सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। धर्म ठोस सत्य और तथ्यों को पाने के अतिरिक्त उसमें मिलने वाली सांत्वना के अतिरिक्त एक विशुद्ध विज्ञान और एक अध्ययन के रूप में वह मानव मन के लिए सर्वोच्च और स्वस्थ व्यायाम है। धर्म मतवाद या भौतिक तर्क नहीं है बल्कि आत्मा के ब्रह्म को जान लेना, तड़प हो जाना तथा उसका साक्षात्कार करना यही धर्म है। धर्म कल्पना की नहीं प्रत्यक्ष दर्शन की चीज है। विवेकानंद मानते हैं कि ब्रह्म प्रकृति पर विजय प्राप्त करना बहुत अच्छी और बड़ी बात है लेकिन अंतः प्रकृति को जीत लेना इससे भी बड़ी बात है। अपने भीतर के मनुष्य को वश में कर लेना तथा मानव मन के सूक्ष्म कार्यों के रहस्य को समझ लेना तथा उसके आश्चर्यजनक गुप्त भेद को अच्छी तरह जान लेना यह बातें धर्म के साथ अविछिन्न रूप से संबंधित है। विवेकानन्द के अनुसार कोई भी सिद्धान्तवादी कार्य रूप में परिणत नहीं किया जा सकता तो बौद्धिक व्यायाम के अतिरिक्त उसका कोई मूल्य नहीं रह जाता है। वेदांत धर्म के स्थान पर आसीन होना चाहता है तो उसे संपूर्ण रूप से व्यावहारिक होना चाहिए। हमें अपने जीवन की सभी अवस्थाओं में से उसे कार्य रूप में परिणत करने में समर्थ होना चाहिए। केवल यही नहीं वेदांत के माध्यम से आध्यात्मिक और व्यावहारिक जीवन के बीच विद्यमान काल्पनिक भेद को भी मिट जाना चाहिए क्योंकि वेदांत एक अखंडता के संबंध में उपदेश देता है। वेदांत कहता है कि एक ही प्राण सर्वत्र विद्यमान है। वेदांत के माध्यम से धर्म के आदेश को संपूर्ण जीवन का आविष्ट करना हमारे प्रत्येक विचार के भीतर प्रवेश करना और कर्म को अधिक से अधिक प्रभावित करना चाहिए तभी इसकी सार्थकता है। विवेकानन्द के अनुसार संसार के समस्त धर्म ग्रंथों में एकमात्र वेदांत ही एक ऐसा ग्रंथ है। जिसकी शिक्षाओं के साथ बाहरी प्रकृति के वैज्ञानिक अनुसंधान से प्राप्त परिणामों का सम्पूर्ण सामजंस्य है। वेदांत को अरण्य गुरुगृहों तक ही सीमित नहीं रखकर उसे हमारे दैनिक जीवन में, नागरिक जीवन में, ग्रामीण

जीवन में, राष्ट्रीय जीवन में, परिणत किया जा सकता है। वेदांत मानव को आत्म परायण से मुक्त कर आत्मविश्वास से सराबोर करता है। विवेकानन्द की वेदांतिक दृष्टि के अनुसार मनुष्य ईश्वर की संतान है, अनंत आनंद की भागीदार है, पवित्र तथा पूर्ण आत्मा है, मनुष्य इस धरती पर देवता है किसी मनुष्य को पापी कहना मानव स्वभाव पर घोर लांछन है। इसलिए जरा मरण रहित नित्यानंदमय आत्मा के रूप में वेदांत शुष्क एकता की अपेक्षा अनेकता में एकता का उद्घोष करता है। वह व्यक्ति को मिटाता नहीं बल्कि वास्तविक व्यक्तित्व का स्वरूप सामने रखता है। वेदांत का अद्वैत रूप यही कहता है कि व्यक्ति जीवन रूप में हम सब अलग–अलग होकर रहते हैं किंतु वास्तव में हम सब एक ही सत्य के स्वरूप हैं और हम अपने को उससे जितना कम पृथक समझेंगे उतना ही हमारा कल्याण होगा। अहम् ब्रह्मास्मि और तत्वमसि का यही भावार्थ है। वेदांत एकतत्ववाद की शिक्षा देता है। सबके प्रति विश्वास करना सिखाता है स्वयं के प्रति और विश्वास का आशय सब प्राणियों से प्रेम, सभी पशु–पक्षियों से प्रेम, तथा सभी वस्तुओं से प्रेम तथा समस्त प्रकृति से प्रेम यही महान विश्वास जगत को अधिक अच्छा बना सकता है। यह वेदांतिक दृष्टि मानव मात्र की समानता का पक्षधर है जो कर्मकांड को निरस्त करती है तथा वर्ण और जाति व्यवस्था को निर्मूल सिद्ध करती है तथा मानव गरिमा को प्रतिष्ठित करती है। आज भारत समेत विश्व के समस्त देशों को वेदांत की इसी व्यवहारिक दृष्टि की सर्वाधिक आवश्यकता है।

निष्कर्ष

स्वामी जी का दृढ़ विश्वास था कि देश की भौतिक उन्नति एवं सामान्य जन की समृद्धि उतना ही आवश्यक है जितना व्यक्ति और समाज की आध्यात्मिक उन्नति। विवेकानन्द का सम्पूर्ण दर्शन गरीबी के अभिशाप में डूबी भारतीय जनता के कल्याण की कामना है। स्वामी विवेकानंद की प्रगतिशीलता का ही यह परिणाम है कि आज भी इतने वर्षों के बाद उनके मत का महत्व बना हुआ है। वेदांत के व्यवहारिक पक्ष की आज भी उतना ही आवश्यकता है। अपवित्र ज्ञान और शक्ति का अतिरेक मनुष्य को असुर बना देता है। आज के इस आधुनिक युग में व्यक्ति अपनी जरूरत से अधिक मशीनी चीजों का आविष्कार कर रहे हैं। इन आविष्कारों के कारण वे अपनी शक्ति को दिनोंदिन बढ़ा रहे हैं साथ ही ये आविष्कार कहीं न कहीं मानवता के लिए खतरा भी हैं। स्वामी विवेकानंद जी का प्रभाव वेदांत दर्शन के ही माध्यम से नहीं वरन् अन्य कई कारणों से आज भी बना हुआ है चाहें स्त्रियों के हित की बात हो, चाहे युवापीढ़ी को जगाने की या फिर किसी अत्याचार या रूढ़िवादी विचार के विरुद्ध खड़े होने की, सभी के लिए उनके विचारों की उपयोगिता सदैव बनी रहेगी कल थी, आज है, कल भी रहेगी।

संदर्भ ग्रंथ

1. पाण्डेय रामशकल, विश्व के श्रेष्ठ शिक्षा शास्त्री।
2. पाण्डेय के.पी., शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक सुधार, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
3. विवेकानन्द साहित्य नवम् खण्ड, अद्वैत आश्रम, पिथौरागढ़।
4. वेदान्त, स्वामी विवेकानन्द, पृष्ठ संख्या 102, 103.
5. विवेकानन्द साहित्य, नवम् खण्ड, पृष्ठ 114.
6. राणा, डॉ. भगवान सिंह, भारत के अमर मनीषी, स्वामी विवेकानन्द, डायमंड पॉकेट बुक (प्रा.) लि., नई दिल्ली।
7. रहबर, हंसराज, योद्धा सन्यासी विवेकानन्द, साक्षी प्रकाशन।
8. कोहली, नरेन्द्र, स्वामी विवेकानन्द, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नई दिल्ली।
9. श्री शंकरानन्द, नित्यानन्द, एकादशोपनिषद – मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।

RRIJM 2015, All Rights Reserved